हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना–पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

भाषा गई तो संस्कृति गई

YEAR: 12 ISSUE: 31 March 2019 *Published by: Hindi Pracharini Sabha - Long Mountain, Mauritius* ISSN 1694-3481

✍ संपादकीय

विश्व में भारतीय संस्कृति को फैलानेवाले गिरमिटिया मजदूर ।

सदियों पहले भारत से निकले गरीब लोगों ने ही पूरे विश्व के कोने–कोने में भारतीय संस्कृति को फैलाया व जीवित रखा । जहाँ भी बसे, अपने खून–पसीने से धरती को स्वर्ग बनाया । मजदूरी करते हुए, दुख झेलते हुए उन्होंने अपने बच्चों को अच्छा संस्कार दिया, अपने धर्म, अपनी संस्कृति और हिंदी भाषा को जीवित रखा । आज उन्हीं प्रवासियों के बच्चे देश को सम्भाल रहे हैं तथा राज कर रहे हैं । उनकी कड़ी मेहनत से ही उनकी औलाद आज सुखी हैं ।

भारत में हर वर्ष भारतीय प्रवासी दिवस का मनाना एक तरह से उन पूवज़ों को याद कर उनके प्रति एक भावभीनी श्रद्धांजलि है । इस अवसर पर पूरी दुनिया के भारतीय प्रवासी एकत्रित होते हैं । हमें अपने पूवज़ों पर गर्व होना चाहिए कि हम उनकी संतानें हैं, जिन्होंने अपनी औलाद के लिए अपना सर्वस्व न्योच्छावर कर हमें सुखी किया । मॉरीशस का इतिहास बताता है कि चीन देश से यहाँ पर गन्ने के खेत में काम करने के लिए मज़दूर लाए गए थे पर बाद में उन्हें वापस भेज दिया गया क्योंकि वे मज़दूरी नहीं कर पाए । जब कि गिरमिटिया मजदूर खूब मेहनती निकले और उन्होंने देश को उपजाऊ बनाकर देश को स्वर्ग बनाया ।

मुझे आज तक याद है जब मॉरीशस स्वतंत्र नहीं हुआ था तो हमारे देश के हमारे बुज़ुर्ग भारत के हर स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत का तिरंगा लेकर गाँवों व शहरों में जुलुस निकालते थे । बैल–गाड़ी को सजाकर बच्चे–बुज़ुर्ग सभी जुलुस में भाग लेते थे । फिर एक जगह पर भारी मेला लगता था जहाँ पर भारत का राष्ट्रगान बड़े प्रेम से गाया जाता था तथा विद्वानों द्वारा भाषण भी होते थे ।

आज कई बड़े ओहदे के भारतीय कर्मचारी विश्व के बड़े–बड़े देशों में कार्यरत हैं। भारत ने बहुत सारे विद्वान और प्रोफेशनल्स पैदा किए हैं जो अन्य देशों की प्रगति के लिए कार्य कर रहे हैं, जिनमें डॉक्टर, इंजिन्यर, वैज्ञानिक, शिक्षक, व्यापारी आदि उल्लेखनीय हैं । इससे यह प्रतीत होता है कि पूरे विश्व की उन्नति में भारतीयों का बहुत बड़ा योगदान रहा है । भारतीयों ने "वसुधैव कुटुम्बकम" का खूब निर्वाह किया है ।

मॉरीशस ही एक ऐसा देश है जहाँ भारतीय संस्कृति पूरे रूप से जीवित है । खासकर हिंदूओं में रहन–सहन, पूजा–पाठ, पहनावा, धर्म–संस्कृति के प्रति श्रद्धा, हिन्दू त्योहारों का मनाना आदि पूरे विश्व के लिए एक मॉडल है । ∎

यंतुदेव बुधु
प्रधान–हिंदी प्रचारिणी सभा

प्रवासी भारतीय दिवस–2019

लगभग दो शताब्दी पहले भारतीय प्रवासी दुनिया के कई देशों में जा बसे । हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भारतीय प्रवासी दिवस मनाया गया, पर इस बार एकदिवसीय सम्मेलन न होकर त्रिदिवसीय रहा । यह आयोजन बनारस में 21, 22 और 23 जनवरी को हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मॉरीशस के प्रधान मंत्री माननीय प्रवीण कुमार जगनाथ जी रहे । वहाँ पर हमारे प्रधान मंत्री का भव्य स्वागत हुआ ।

मॉरीशस से एक बड़ा प्रतिनिधि मंडल इस उत्सव में भाग लेने गया हुआ था जिनमें हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से 12 लोग थे। हवाई जहाज़ से उतरते ही गरमजोशी के साथ हमारा स्वागत किया गया । माल्यार्पण, माथे पर तिलक लगाया गया, हमारी आरती उतारी गई तथा शहनाई की धुन से हमारा अभिनंदन हुआ ।

सम्मेलन स्थल पर प्रवासियों के बीच

इमिग्रेशन से होकर हम एरपोर्ट से बाहर निकले,बस हमारा इंतज़ार कर रही थी जिसमें एक पुलिस का कर्मचारी तथा मार्गदर्शन के लिए एक गाइड भी था । लगभग 80 लोग हमारे साथ अशोका इंस्टिच्यूट एण्ड मानेजमेंट के होस्टल में ठहरे जहाँ हमें रात का भोजन तथा सुबह नाश्ता प्रदान किया गया । वहाँ ठहरने के लिए हमें पैसे भी चुकाने नहीं पड़े। यह मॉरीशस के भारत में उच्चायुक्त श्री जगदीश गोबरधन के सहयोग से हो पाया । रास्ते के किनारे भारत के प्रधान मंत्री मोदी जी के साथ हमारे देश के प्रधान मंत्री का चित्र देखकर दिल गद्गद् हो गया ।

पूरे बनारस को दुल्हन की तरह सजाया गया था । रात में चारों ओर खासकर नदी व पुल के आसपास बिजली बत्तियों का

पृष्ठ 2 पर जारी .....

कुम्भ मेले से गणतंत्र दिवस तक

प्रयागराज में स्वागतोपरान्त

बनारस में आयोजित पन्द्रहवीं त्रिदिवसीय प्रवासी भारतीय दिवस में मॉरीशस से हम बीस जनवरी को प्रस्थित हुए। "ऐर मॉरीशस" की एक विशेष उड़ान द्वारा हम 'लालबहादुर शास्त्री" हवाई अड्डे पर तीन बजे अपहरान में पहुँचे। जहाज़ से उतरते ही तिलक, आरती और पुष्पों तथा माल्यार्पण के साथ हमारा भव्य स्वागत हुआ। बस द्वारा हमें "अशोका इंस्टीच्यूट एण्ड मानेजमेंट" के छात्रावास में ठहराया गया।

चौबीस जनवरी को, प्रातः छह बजे प्रयागराज के लिए,बस तैयार खड़ी थी। हमारे पथ-प्रदर्शक और सुरक्षा हेतु पुलिस का सिपाही भी हमारे साथ ही थे। आप्रवासी भारतीयों के लिए नब्बे बसों का कारवाँ कतार में जा रही थीं। सहायता के लिए हमारे दूतावास के कर्मचारी भी साथ-साथ वाहन में प्रयागराज तक गए। बस में अल्पहार वितरित किया गया। तीन-चार बजे के बीच हम प्रयागराज पहुँचे।

मोदी सरकार द्वारा "कुम्भ-मेला-2019" का भव्य आयोजन रहा। हर सम्भव सुविधा उपलब्ध थी। सन्यासियों का अखाड़ा, संस्कृति-ग्राम, कला-ग्राम, प्रवचन स्थल, भण्डारा, प्रदर्शनी केंद्र, बिक्री ज़ोन आदि सब उचित सुविधाओं का प्रबन्ध किया गया था। मगर सबसे अद्भूत था - "टेंट-कौलनी, टेंट-सिटी",शायद पक्का मकान भी इतना सुविधाजनक और आरामदायक नहीं होता।

कुम्भ स्थल पर हमने भोजन किया, फिर नाव पर सवार नदी के उस पार त्रिवेणी पहुँचे। अक्षयवट और सरस्वती-कूप के दर्शन किए जिन-का द्वार हमारे लिए खोला गया था। ऐसा कहा जाता है कि अक्षयवट के दर्शन के बाद ही कुम्भ स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् त्रिवेणी में डुबकी लगाकर अपनी बस स्थल पर गए। फिर बस हमें प्रयागराज रेलवे स्टेशन पहुँचाई जहाँ पर मॉरीशसवासियों के लिए एक विशेष रेल हमारा इंतज़ार कर रही थी। हमने ट्रेन में अपनी-अपनी जगह ली। ट्रेन रात्रि के नौ बजे के लगभग दिल्ली के लिए चल पड़ी। रात्रि-भोज ट्रेन में ही परोसा गया। कुम्भ मेला पीछे रह गया मगर यह हमारे लिए एक अविस्म-रणीय अनुभव रहा।

इंडिया गेट के पास पारेड का एक दृश्य

पचीस तारीख को प्रातः हम दिल्ली पहुँचे। वहीं पर हमें गणतंत्र दिवस में भाग लेने हेतु अमंत्रण-पत्र मिला। वहाँ से हमें होटल तक पहुँचाया गया, जहाँ हम ठहरनेवाले थे। दूसरे दिन अर्थात छब्बीस को प्रातःकाल निर्देशानुसार हम "राजीव चौक" पहुँचे जहाँ से हमें बस द्वारा "इंडिया-गेट" स्थित राज पथ ले जाया गया जहाँ हम आप्रवासियों के लिए स्थान आरक्षित था। राजपथ 2.5 किलोमिटर लंबा रास्ता दर्शकों से भरा था। भिन्न-भिन्न राज्यों का प्रदर्शन हुआ जो मुख्य विषय "महात्मा गांधी का 150वीं वर्ष-गाँठ" पर आधारित था। भारत की सैन्य-शक्ति की झाँकी प्रस्तुत की गई। अन्त में तीन रंगो के गुब्बारे छोड़े गए। साथ में, हमारी औप-चारिक यात्रा भी समाप्त हुई। ■

विवरण - तारकेश्वरनाथ गिधारी

पृष्ट 1 से बाकी .....(प्रवासी भारतीय दिवस)

जलना मानो दिवाली की रात की याद दिलाता था। प्रवासियों के लिए सुरक्षा, स्वागत व मार्गदर्शन के लिए बहुत बढ़िया तरीके से प्रबंध हुआ था।

सबसे अधिक प्रवासी भारतीय मलेशिया से आए थे। हमारी संख्या उन से थोड़ा कम थी। इस महा आयोजन में 75 देशों से प्रवासी भारतीय बनारस की खसियत से परिचित हुए। लोग मॉरीशस,यूएस, ओमान, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, कोरिया, जापान आदि देशों से आए थे। प्रवासियों के आवास के लिए टेंट सिटी का भी निर्माण किया गया था।

सम्मेलन के सभागार में

सम्मेलन बड़ा लालपुर क्रीड़ा मैदान में बनी भव्य इमारतों में हुआ जहाँ कई देशों से आए प्रवासियों का स्वागत हुआ। इस बार सम्मेलन का विषय था - "भारत के नव निर्माण में प्रवासियों की भूमिका।" भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, केंद्र सरकार के मंत्रीगण तथा सभी राज्यों के मुख्य मंत्री समेत तमाम विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

तीन दिनों के इस सम्मेलन का दैनिक अलग-अलग विषय रहा। सम्मेलन का प्रथम दिन नव-जवानों को ध्यान में रखकर विषय रखा गया था। रात्रि में बॉलीवुड की प्रसिद्ध अदा-कारा और सांसद हेमा मालिनी द्वारा गंगा नृत्य नाटिका की प्रस्तुति हुई। दूसरे दिन यानी 22 जनवरी को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी तथा हमारे देश के प्रधान मंत्री मान. प्रवीण कुमार जगनाथ ने प्रवासियों को संबो-धित किया। तीसरा दिन भी काफ़ी दिलचस्प रहा क्योंकि अतिथियों को सम्मानित किया गया साथ में उत्सव की समाप्ति का दिन रहा। इस अवसर पर प्रवासियों के हित में कई आव-श्यक निर्णय लिए गए। ■

विवरण - श्रीमती रोहिणी रामरूप

भारत में हिंदी प्रचारिणी सभा के सदस्यों की साहित्यिक यात्रा

विवरण – श्री धनराज शम्भु

हिंदी प्रचारिणी सभा के कार्यकारिणी सदस्यों की प्रतिनिधि टोली ने बनारस में साल 2019 के 'प्रवासी भारतीय दिवस' में 21–23 जनवरी को सक्रिय रूप से भाग लिया। उसी के दौरान दिल्ली लौटने पर ता. 27 जनवरी को हमारी साहित्यिक यात्रा का श्रीगणेश हुआ। उसी शाम को हमारी टोली 'कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय' पहुँची जहाँ विद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्षा प्रो. पुष्पा रानी जी ने हमारा स्वागत किया और आवास के लिए हमें विद्यालय के अतिथि–गृह में ठहराया। हम कुल बारह लोग थे। कुछ समय आराम करने तथा चाय की चुस्की लेने के बाद पुष्पा रानी जी ने हमें कुरुक्षेत्र का भ्रमण कराया। हमने कई ऐतिहासिक स्थलों के साथ–साथ उस स्थान के भी दर्शन किए जहाँ भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था।

संगोष्ठी से पहले हिंदी प्रचारिणी सभा के सदस्य प्रो. पुष्पा रानी जी के साथ हॉल के सामने

ता.28 जनवरी को विद्यालय के 'सिनेट हॉल' में सम्मेलन के अवसर पर हमारा भव्य स्वागत हुआ। सम्मेलन का आयोजन 'कुरूक्षेत्र वि–श्वविद्यालय','मातृ भूमि सेवा मिशन' और 'हिंदी प्रचारिणी सभा' के मिले–जुले सहयोग से हुआ था। सिनेट हॉल विद्वानों तथा पी. एच. डी. के छात्रों से खचाखच भरा था। सम्मेलन का विषय था 'मॉरीशसीय समाज, साहित्य व संस्कृति में भारत का प्रभाव'। प्रो. पुष्पा रानी के संचालन में एक से बढ़कर एक विद्वानों ने अपने आलेख वाचन किए। मॉरीशस के प्रतिनिधियों में हिंदी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष श्री यंतुदेव बुधु ने मॉरीशस की स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा हिंदी का प्रचार, सचिव श्री धनराज शम्भु ने मॉरीशसीय सा–हित्य, कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन ने हमारी सभा द्वारा पुस्तक रचना, सदस्या श्रीमती रोहिणी रामरूप ने शिक्षण की व्यवस्था और सदस्य श्री तारकेश्वरनाथ ग्रिधारी ने भोजपुरी–हिंदी–संस्कृत के पठन–पाठन पर अपना विचार प्रस्तुत किया। उपस्थित अन्य विद्–वानों ने भी अपने–अपने विचार रखे।

आर्य गर्ल्स कॉलेज–अम्बाला कैंट में सभा के सदस्य सम्मानित

ता.29 जनवरी को अम्बाला कैंट के आर्य गर्ल्स कॉलेज की अध्यक्षा डॉ. अनुपमा ने हमारा स्वागत किया। वहाँ पर भी हमारी संस्था की ओर से हमने बारी–बारी से मॉरीशस में हिंदी के पठन–पाठन पर अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए। वहाँ उपस्थित विद्वानों को भी हमें सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अंत में सभी हमें स्मृति चिह्न तथा पुष्प माला से सम्मानित किया गया। वहाँ पर भी मातृ भूमि सेवा मिशन के संयोजक व संचालक श्री प्रकाश मिश्र की उपस्थि–ति रही जिन्होंने अपने मधुर वाणी से आशीष वचन प्रस्तुत किए।

सभा के सदस्य मॉरीशस के उच्चायुक्त महामहिम श्री जगदीश गोबरधन के साथ

ता.31 जनवरी को हम दिल्ली लौटे जहाँ पर हमने भारत में मॉरीशस के उच्चायुक्त महामहिम श्री जगदीश गोबरधन से एक मुलाकात की। उन्होंने अपने दफ़्तर में हमारा स्वागत किया। हमसे मिलकर वे बहुत खुश हुए और हमसे एक घंटे तक बातें करते रहे।

दिल्ली में हिंदी प्रचारिणी सभा के सदस्य 'हिंदी रत्नाकर सम्मान' से विभूषित

पहली फरवरी को दिल्ली के हिंदी भवन में 'पाथेय साहित्य कला अकादमी' तथा साहित्यिक शोध संस्था' द्वारा आयोजित संगोष्ठी तथा सम्मान समारोह में हमें आमंत्रित किया गया। विषय था "विश्व संस्कृति तथा पत्रकारिता'। इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में कई देशों के प्रतिभागी उपस्थित थे जिनमें श्रीलिंका, मोस्को, मलेशिया, यूरोप तथा मॉरीशस थे। सभी लोगों ने अपने–अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री यंतुदेव बुधु ने मॉरीशस में भारतीय संस्कृति पर अपना विचार दिया। श्री धनराज शम्भु ने मॉरीशस में हिंदी पत्रिकारिता पर बात की। सभी आलेखों को सराहा गया।

अंत में हिंदी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष, महासचिव तथा कोषाध्यक्ष को 'हिंदी रत्नाकर सम्मान' से विभूषित किया गया। ■

चित्रावाली – संगोष्ठी के दौरान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय-कुरुक्षेत्र, आर्य गर्ल्स कॉलेज-अंबाला तथा हिंदी भवन-दिल्ली के कुछ दृश्य ।